|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| 17. August 2025 | | | |
| **20. Sonntag im Jahreskreis C** | | | |
| Erste Lesung: Jer 38,4-6.8-10; Zweite Lesung: Hebr 12,1-4; Evangelium: Lk 12,49-53 | | | |
|  | | | |
| Aus pastoralen Gründen können auch die Perikopen der Tagesmesse vom 15. August, dem Hochfest Mariä Aufnahme | | | |
| in den Himmel, genommen werden. | | | |
|  |  | |  |
| Eröffnung: | GL 700 | | Wie freue ich der Botschaft mich |
|  | GL 144, 1+4+5 | | Nun jauchzt dem Herren alle Welt |
|  |  | |  |
| Kyrie: | GL 157 | | Herr, erbarme ich |
|  |  | |  |
| Gloria: | GL 715 | | Es jubelt aller Engel Chor |
|  |  | |  |
| Antwortgesang: | Psalm 40, 2-4. 18 | |  |
|  | Kehrvers: | |  |
|  | GL 307, 5 | | Meine Hilfe und mein Retter |
|  | oder | |  |
|  | GL 365 | | Meine Hoffnung und meine Freude |
|  | GL 424, 1+3 | | Wer nur den lieben Gott lässt walten |
|  |  | | |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 4 |  | |
|  | Vers: |  | |
|  | *Meine Schafe hören auf meine Stimme;* | | |
|  | *ich kenne sie , und sie folgen mir.* | | |
|  |  |  | |
| Credo: | GL 456, 1+2+4 | Herr, du bist mein Leben | |
|  |  |  | |
| Gabenbereitung: | GL 702 | Herr, was im alten Bunde | |
|  | GL 346, 1-3 | Atme in uns, Heiliger Geist | |
|  |  |  | |
| Sanctus: | GL 718 | Heilig | |
| Agnus Dei: | GL 202 | O du Lamm Gottes | |
|  |  |  | |
| Danksagung: | GL 342, 2-4 | Komm, Tröster, der die Herzen lenkt | |
|  | GL 351, 2+4 | Der du der Tröster wirst genannt | |
|  | GL 357, 1+3! | Gieß sehr tief in mein Herz hinein | |
|  |  |  | |
| Schluss: | GL 347, 1+4 | Der Geist des Herrn | |
|  | GL 452, 1+4 | Der Herr wird dich mit seiner Güte | |
|  | GL 464, 1-3 | Gott liebt diese Welt | |